International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457

Volume-1, Issue-3 June- 2014

P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org

Email- editor@ijesrr.org

ब्रह्मा जी के सन्दर्भ में पुष्कर का इतिहास

डॉ. रक्षा कंवर

इतिहास विभाग

जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ, विश्वविद्यालय

पुष्कर का परिचय

अरावली की सुरम्य पहाडियों के मध्य स्थित तीर्थराज पुष्कर आदि तीर्थ होने के साथ ही हमारी लोक संस्कृति, आध्यात्मिकता, धार्मिक, सहिष्णुता, भावात्मक एकता सर्वधर्म समन्वय का केन्द्र हमेशा से रहा है।

महाभारत में लिखा है कि तीनों लोकों में मृत्यु लोक महान है और मृत्युलोक में देवताओं का सर्वाधिक प्रिय स्थान पुष्कर है। वेद, पुराण, रामायण तथा महाभारत जैसे धर्म ग्रंथों में जिस तीर्थराज पुष्कर का उल्लेख किया गया है वह तीर्थराज राजस्थान में अजमेर से 11 किलोमीटर दूर अरावली की सुरम्य पर्वत शृंखलाओं के मध्य स्थित है। सुरम्य नाग पर्वतमालाएँ अपने अंचल में पुष्कर को समेटे हुए है। यही स्थान (नाग पर्वतमालाएँ) कभी अगस्त्य, भर्तृहरि, विश्वामित्र, कपिल तथा कण्व आदि ऋषि मुनियों के तप, चिंतन तथा मनन का पवित्र स्थल रहा है।[1]

पुष्कर की उत्पत्ति

भगवान श्री विष्णु की नाभि से प्रकट हुए इस कमल को ही वेदपाठी ऋषि पुष्कर तीर्थ कहते हैं। इसमें लोककर्त्ता ब्रह्माजी ने यज्ञ करने निमित्त वेदी बनवायी और ब्रह्माजी ने तीन पुष्कर की कल्पना की। इसी उद्देश्य के लिए ही ब्रह्माजी ने स्वास्ति हो स्वास्ति (मंगल ही मंगल) शब्द का उच्चारण करते हुए कमल का पुष्प पृथ्वी पर फेंका। यह पुष्प नाग पहाडियों में मध्य में आकर इस भूमि को स्पर्श किया जो ज्येष्ठ पुष्कर कहलाया, जो तीनों लोकों को पवित्र करने वाले सरोवर के रूप में विख्यात है। इसके देवता साक्षात् ब्रह्माजी हैं। इसके पश्चात् यह पुष्प 2 मील दूरी पर मध्य पुष्कर में आकर गिरा जिसके देवता भगवान विष्णु हैं। तत्पश्चात् यह पुष्प जिस स्थान पर आकर गिरा वह कनिष्ठ पुष्कर कहलाया, जिसके देवता रुद्र हैं।

इस प्रकार यह तीनों स्थान ब्रह्म, पुष्कर, विष्णु पुष्कर तथा शिव पुष्कर के नाम से जगत में प्रसिद्ध हुए। इन तीनों कुण्डों में स्नान करके मनुष्यों के पाप नाश होंगे ऐसा कहकर ब्रह्माजी ने यज्ञ स्थान के लिए इन्द्र मार्ग के उत्तर में प्राचीन सरस्वती तक नंदा के पूर्व में कन्यास तक योजना प्रमाण भूमि ठहराई और तभी से यह स्थान पुष्कर तीर्थ कहलाया तथा इस प्रकार यह स्थान सब प्राणियों को स्वर्ग एवं मोक्ष देने वाला होगा। यहां एक योजन भर के भीतर कीटपतंग, पशु–पक्षी भी मर कर मोक्ष को प्राप्त होंगे।[2]

पुष्कर का ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक विवेचन

पौराणिक, रामायण व महाभारत काल में पुष्कर में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई हैं, जो यह सिद्ध करती है कि उस काल विशेष में पुष्कर सरोवर न केवल विद्यमान था, अपितु समस्त जनजीवन का प्रमुख केन्द्र रहा है और लोग दूरस्थ क्षेत्रों से कष्टप्रद यात्राएँ कर पुष्कर के पवित्र सरोवर के पवित्र जल में स्नान कर स्वयं को धन्य समझते थे।[3]

पौराणिक काल

पुष्कर संस्कृत भाषा के अति प्राचीन शब्दों में से एक है। यह शब्द अपने विभिन्न अर्थों में अनेक स्थलों पर प्रयुक्त हुआ है। यह शब्द इस सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थल का वाचक कब बन गया, यह कहना कठिन है। पौराणिक काल में पदम पुराण, कूर्म पुराण, वायु पुराण, वामन पुराण, गरूड पुराण, भविष्य पुराण, वराह पुराण आदि ने इसके विभिन्न पहलुओं एवं महत्व पर विचार किया है।

रामायण काल

परवर्ती काल में इसका उल्लेख रामायण काल में मिलता है। वाल्मीकि रामायण में यह उल्लेख मिलता है कि एक बार महर्षि विश्वामित्र पुष्कर तीर्थ के तट पर तपस्या कर रहे थे तब अप्सराओं में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मेनका पुष्कर सरोवर में स्नान करने आई, मेघों में विद्युत की भांति चमकते जिनके अप्रतिम सौन्दर्य को देख कर विश्वामित्र काम के वशीभूत हो गए थे। साथ ही इस बात का भी रामायण में उल्लेख मिलता है कि रामचन्द्र जी ने अपने पिता दशरथ का पिंडदान मध्य पुष्कर के निकट गया कुंड में किया था।

महाभारत काल

महाभारत काल में पुष्कर का प्रकरण बार–बार आया है, जो तीर्थ स्थल की तत्कालीन महत्ता का ज्वलंत प्रमाण है। इन प्रकरणों में प्रमुखतरू सुभद्रा हरण के पश्चात् मार्ग में अर्जुन का पुष्कर में रुकना, वन पर्व में कृष्ण का पुष्कर में दीर्घकाल तक तपस्या करने का वृतांत तथा परशुराम का भी उसी प्रकार का विवरण है। महाभारत के आदिपर्व, शल्यपर्व तथा शांतिपर्व आदि वे स्थल हैं जिसमें पुष्कर का विवरण मिलता है। पुष्कर की खुदाई के समय ऐसे सिक्के भी मिले हैं जिनसे महाभारत काल के प्रसंगों के संकेत मिलते हैं।

बौद्धकाल

पुष्कर क्षेत्र ईसा से दो शताब्दी पूर्व से लेकर दूसरी शताब्दी तक बहुत ही घनी आबादी वाला पवित्र नगर रहा है। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के कुछ शिलालेख प्राप्त हुए हैं जिनमें वर्णित प्रसंगों के आधार पर यह कहा जाता है कि हिन्दुओं के समान ही बौद्धों के लिए भी पुष्कर उतना ही पवित्र स्थान था। महामहोपाध्याय पंडित शिवदत्त शर्मा ने पाली भाषा के बौद्ध ग्रन्थों का हवाला देते हुए नागरी प्रचारणी पत्रिका के भाग 8 अंक 4 में यह मत प्रस्तुत किया है कि भगवान बुद्ध ने जब पुष्कर आए थे तब उन्होंने यहां तक ब्राह्मणों को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। फलस्वरूप बौद्धों की एक नई शाखा श्पोष्करायिणीय स्थापित हुई।

सांची और काकीनाड़ा के प्रसिद्ध बौद्ध स्तूपों में अनेक शिलालेख मिले हैं। इसमें से कई शिलालेखों में पुष्कर का प्रसंग दृष्टिगत होता है। उनमें कुछ इस प्रकार हैं–

1. पौखरतों हिमगिरनों दान

2. पौखरतों इसिदतायालेवन पज्यावतिया दान

3. अशस पोखरे यकस दान

उपरोक्त लेख ईसा से 200 वर्ष पूर्व के हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि एक समय बहुत से बौद्ध धर्मनिष्ठ लोग पुष्कर में रहते थे। नासिक के पास त्रिशमी पहाडियों की एक गुफा में 125 ईसा पश्चात् का एक शिलालेख मिला है, जिसके अनुसार शक वंश के राजा दिनीका के पुत्र उषवदत्त ने पुष्कर में तीन गायों एवं एक गांव का दान दिया। इसके पश्चात् शंकराचार्य के परिश्रम से पुष्कर में पुरातन धर्म का संचार बढ़ा और शनैरू शनैरू बौद्ध धर्म के अनुयायी कम होने लगे।[4]

ऐतिहासिक तथ्य

तक्षकों (नाग) का धार्मिक दृष्टि से बौद्धों के साथ वैमनस्य चलता रहता था। बौद्धों और हूणों के बार–बार आक्रमण के फलस्वरूप तक्षक अपना स्थान छोड़कर पुष्कर क्षेत्र में पहुंच गए। उन्होंने पुष्कर के निवासियों (मेड़ों) को मार भगाया और स्वयं पुष्कर में रहने लगे। नाग पर्वत आज भी उनकी स्मृति का प्रतीक बना हुआ है।

कालांतर में यहां राजपूत काल में परमारों का शासन आ गया उस समय इसे पद्यावति कहा जाने लगा। नाग और परमार दोनों ही जैन धर्मानुयायी थे अतरू मंडोर के परिहारों एवं मेरवाड़ा क्षेत्र के गुर्जर राजाओं ने मिलकर ब्राह्मण धर्म की स्थापना के लिए पुष्कर से परमारों को सत्ताच्युत किया। इसके बाद चौहान शासकों का पुष्कर से विशेष संबंध रहा है। 'पृथ्वीराज विजय', 'हम्मीर काव्य', सुर्जन चरित्र आदि ग्रंथों में चौहान राजवंश के संस्थापक ब्राह्मण की जन्मभूमि पुष्कर बताई गई है। रानी रूद्राणी को आत्मप्रभा कहा जाता था। वह कई यौगिक क्रियाओं की ज्ञाता थी। कहते हैं कि रानी प्रतिदिन पुष्कर में स्थापित ज्योतिर्लिंग के समक्ष एक हजार दीपक जलाकर प्रवाहित किया करती थीं। ईसा पश्चात दसवीं शताब्दी के एक शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि रूद्रात्यि नामक ब्राह्मण ने पुष्कर में विष्णु का मन्दिर बनवाया था। उस समय अजमेर में राजा वाक्पतिराय का शासन था। वे शैव मतावलंबी थे और उन्होंने पुष्कर में भगवान शिव का मन्दिर बनवाया जो राजा पृथ्वीराज तृतीय के शासन काल तक मौजूद था।

सन् 1973 को एक शिलालेख हर्ष मन्दिर में मिला है, जिसमें यह वर्णन मिला है कि राजा सिंहराज ने पुष्कर में श्स्नानत्र कर हर्षनाथ मन्दिर के लिए चार गांव दान में दिए थे।

अजयपाल के पुत्र अर्णोज ने पुष्कर सरोवर की भी मरम्मत करवाई और वराह मन्दिर का निर्माण कराया, जिसकी मूर्ति को मुगलकाल में जहांगीर ने तुड़वा दिया था। सन् 1719 से 1818 तक अजमेर का शासन मारवाड़ और मराठों के अधीन रहा इस काल में कई घाटों और मन्दिरों का निर्माण पुष्कर में किया गया।[5]

पुष्कर स्थित दर्शनीय स्थल – पौराणिक एवं धार्मिक महत्व

पवित्र पुष्कर झील अंडाकार रूप में है, जो तीन मील के घेरे में फैली हुई है। झील के चारों ओर पर्वत है जिनमें नाग पर्वत सबसे दर्शनीय है। इसी नाग पर्वत से वर्षा ऋतु का जल पुष्कर सरोवर में आकर गिरता है।

पुष्कर झील का जल चन्द्रमा के समान निर्मल और शीतल है। इसके जल को ब्रह्माजी ने अपनी दिव्य दृष्टि से पवित्र किया है जो जल पीने में स्वादिष्ट और स्वास्थ्य कारक है और पापों को हरने वाला है। इतिहासकार कर्नल टॉड के अनुसार पुष्कर सरोवर की पवित्रता की तुलना तिब्बत के मानसरोवर के सिवाय किसी अन्य सरोवर से नहीं की जा सकती। यदि प्रयागराज तीर्थराज है, तो पुष्कर सभी तीर्थों का सम्राट।

झील के चारों ओर राजा महाराजाओं के बनवाये हुए 52 घाट बने हुए हैं। इन घाटों में इन्द्र घाट, महादेव घाट, बंशी घाट, मुरली घाट, नृसिंह घाट, विश्राम घाट, बद्री घाट, गणगौर घाट, रामघाट, चीर घाट, जनक घाट, गऊ घाट, यज्ञ घाट, ब्रह्म घाट, परशुराम घाट, सप्तऋषि घाट प्रमुख हैं।

इनमें गऊ घाट एवं वराह घाट प्रमुख हैं। गऊ घाट में मराठों ने संतूराम बावलियां की यादगार में सवा लाख खर्च करके एक सुन्दर छतरी बनवाई थी। संवत् 1762 वि.सं. में सिखों के गुरू गोविन्द सिंह ने गऊ घाट पर गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ किया था।

इंग्लैण्ड के भूतपूर्व सम्राट जॉर्ज पंचम की पत्नी क्वीन मैरी ने यादगार के रूप में जनाना घाट बनवाया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की अस्थियाँ इसी घाट से विसर्जित की गई थी। गऊ घाट, वराह घाट और खास घाटों पर संगमरमर की पेडियां व छतरियाँ बनी हुई है।

पुष्कर झील के उत्तरी तट पर बसी पुष्कर नगरी अपने आप में एक विशाल मन्दिर से कम नहीं है। अनुमान है कि पूरे कस्बे और आसपास में छोटे–बड़े कुल मिलाकर 400 मन्दिर हैं। इनमें ब्रह्माजी का मन्दिर, सावित्री, गायत्री, अटमेटश्वर महादेव, वराह मन्दिर, श्री रामबैकुंठ, प्राचीन रंगजी व बद्रीनारायण मन्दिर प्रमुख हैं।[6]

पुष्कर क्षेत्र में ब्रह्माजी द्वारा यज्ञ करना

ब्रह्माजी ने देवताओं और ऋषियों की उपस्थिति में कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णमासी तक सृष्टि की रचना हेतु पुष्कर में महान यज्ञ सम्पन्न किया। पदम पुराण के अनुसार कथा इस प्रकार है– ब्रह्मा जी ने उपर्युक्त स्थल के चयनार्थ कमल पुष्प फेंका जो पुष्कर में गिरा और तीन स्थानों पर टकराया, जहाँ से जल प्रस्फुटित हुआ। वे तीनों स्थान आज भी ज्येष्ठ पुष्कर, मध्य पुष्कर और कनिष्ठ पुष्कर (बूढ़ा पुष्कर) कहलाते हैं। शास्त्रोक्त विधि से यज्ञ के लिए ब्रह्माजी ने अपनी पत्नी सावित्री को बुलाने के लिए अपने पुत्र

नारद को भेजा। सावित्री जी नारदजी को कथन का गलत अर्थ लगाने से समय पर नहीं पहुंच पाई। तब ब्रह्माजी के आदेश पर इन्द्र ने एक ग्वाल कन्या को गाय के मुंह में डालकर पवित्र करके उसे गायत्री नाम देकर ब्रह्माजी की पत्नी के रूप में यज्ञ में बैठा दिया।

सावित्री जी ने अपने स्थान पर गायत्री को देखा तो वे क्रोधित हो गईं तथा ब्रह्माजी को श्राप दिया कि पुष्कर के अतिरिक्त आपकी पूजा कहीं और नहीं होगी तथा अन्य समस्त देवताओं को भी श्राप दिया और स्वयं रूष्ट होकर निकटवर्ती पहाड़ी रत्नागिरी पर चढ़ कर वहां प्रचंड तप करने लगी तथा उसी में समा गयी। उसी स्थान से उसी समय एक झरना फूटा जो सावित्री झरने के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यज्ञ की समाप्ति पर ब्रह्माजी ने पुष्कर में स्नान कर वरूण का पूजन किया और अग्नि में आहूति दी। इसी स्थल पर गायत्री मंत्र की उत्पत्ति हुई थी।

ऊँ भूर्भूवः स्वः तत्सवितर्वरेण्यं भृगोदेवस्य

धीमहि धियो यौन: प्रयोदयात् ऊँ।।

इस प्रकार यह यज्ञ 5 दिन तक कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी से पूर्णिमा पर समाप्त हुआ। इसी कारण से ब्रह्माजी के महान यज्ञ की स्मृति में अन्तकाल से पुष्कर में कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णमासी तक विशाल धार्मिक मेला भरता आ रहा है, वहीं कुछ सदियों से एक बड़ा पशु मेला भी लगता है।[7]

ब्रह्माजी का मन्दिर

पुष्कर झील के पूर्व में जहाँ दक्षिण स्थापत्य शैली पर आधारित रामानुज संप्रदाय का विशाल रमा बैकुंठ मन्दिर है वहीं पश्चिम में ब्रह्माजी का प्राचीन मन्दिर है। समस्त विश्व में ब्रह्माजी का यही एकमात्र मन्दिर है।

ब्रह्मा मन्दिर के निर्माण की तिथि एवं निर्माता के नाम के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। मन्दिर में वर्तमान में स्थापित प्रतिमा की प्रतिष्ठा विक्रम संवत् 713 में जगतगुरू आदिशंकराचार्य ने की थी। 1401 ई. में रतलाम के महाराजा ने इस मन्दिर का विस्तार करवाया था। सन् 1719 ई. में सवाई जयसिंह (जयपुर) के समय आमेर के पुरोहित गिरधरदास की पुत्री फूंदी बाई ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया था तथा सन् 1809 ई. में माधवराव सिंधिया ग्वालियर नरेश के मंत्री गोकुलचंद पारीख ने एक लाख तीस हजार रुपये की लागत से इस मन्दिर का पुनर्निर्माण करवाया था।

मन्दिर तक पहुंचने के लिए संगमरमर की साठ सीढियाँ बनी हुई हैं। फर्श में चाँदी की प्राचीन तथा वर्तमान समय के हर प्रकार के सिक्के लगे हुए हैं।

मन्दिर में ब्रह्माजी की चतुर्मुखी प्रतिमा प्रतिष्ठित है जिसे मूर्तिकार ने अपनी कला से सजीवता एवं सुन्दरता प्रदान की है। संगमरमर से निर्मित कमल पुष्प पदमासन युक्त चन्द्रमुखी ब्रह्मा अपने हाथों से कमल कमंडल वेद एवं माला लिए ऐसे शोभित हो रहे हैं जैसे जीवों (मानव, पशु एवं पक्षीगण) को मुक्ति का संदेश दे रहे हों।

इस मन्दिर में ही पालालेश्वर महादेव जिन्हें कपालेश्वर भी कहा जाता है, पंचमुखी महादेव, सूर्य नारायण, नवग्रह, दत्तात्रेय तथा सप्तऋषि मन्दिर भी अलग से विद्यमान है।[8]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Sarda, Harbilas, Ajmer–Historical and Descriptive 1941, Pg. 157
2. Tod's Annals and Antiquities of Rajasthan (Hindi Translation) Thekur, Keshav Kumar, Allahabad, 1960, Pg. 611
3. शर्मा, शिखा, एम.ए. उतरार्द्ध शोधकर्ता, राजस्थान की प्राकृतिक झीलों का बाहरिक विकास पुष्कर झील : एक पारिस्थितिकीय अध्ययन 2003–2004
4. हेमवती शर्मा, ब्रह्म भूमि पुष्कर का चमत्कार, पृ. सं. 14
5. बालचन्द्र व्यास, समय की शीला पर पुष्कर, पृ. सं. 3–22, नवम्बर 1939
6. गिरधर तेजवानी, अजमेर ग्लास (कल आज और कल), रिमझिम प्रकाशन, अजमेर 2010, पृ. सं. 31
7. संक्षिप्त पदमपुराण तीर्थ की महिला, पृ. सं. 43–44
8. बालचन्द्र व्यास, समय की शीला पर पुष्कर, पृ. सं. 3–22, नवम्बर 1939